ISSN 2395-051X

सामान्य की अवधारणा (महामारी समय के संदर्भ में)

डॉ. अंजना चतुर्वेदी

प्राध्यापक, अर्थशास्त्र

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

सामान्य परिस्थितियां जब तक उपस्थित रहती है, तब तक उनके श्रेष्ठ होने का, सर्वोत्तम होने का अर्थ, जन-सामान्य को समझ नहीं होता, परंतु जब परिस्थितियां असामान्य हो जाए तो सामान्य होने का महत्व ज्ञात होता है। सामान्य की श्रेष्ठता को कोरोना समय ने सभी को अहसास कराया है और भारतीय व्यवस्था एवं परम्पराओं को श्रेष्ठ सिद्ध किया है।

मुख्य शब्द - सामान्य, महामारी, परस्परा ।

सामान्य शब्द का अर्थ सबको मान्य से है अर्थात् आम अथवा साधारण होने से है। यह एक विशेषण है और जहाँ भी प्रयुक्त होता है उसके बारे में अपना अर्थ प्रदान करता है। व्यक्ति, समय, परिस्थिति रचना, बनावट, घर, जानवर, पशु, पक्षी, संसार की सभी चीजे सामान्य जुड़ने के सामान्य होती है। अर्थात् सामान्य विशेषताओं वाला, जो न उत्कृष्ट है न निकृष्ट अर्थात् ''मध्य का'', परंतु सबकी चाहत सामान्य होने की नही होती। सब उत्कृष्ट वनना चाहते है। यदि जीवन में सब कुछ सामान्य चले तो उसका कोई महत्व समझ नहीं पाता। यदि आपका जीवन सामान्य रूप से चल रहा है, तो उसका कोई मोल नहीं पता होता पर थोड़ा सा परिवर्तन अथवा सामान्य अवस्था से विचलन उसका महत्व दिखला देता है। यदि आप सामान्य रूप से चल रहे, उठ रहे हैं, अपने नियमित काम कर रहे तो कोई बड़ी बात नहीं लगती कभी किसी अवसर पर एक छोटा जख्म, चोट अथवा असमर्थता जो निर्भरता को कम कर दे अथवा खत्म कर दे, उदाहरण मान ले पैर की मामूली चोट चलने में असमर्थता ला दे तो उस समय सामान्य का महत्व समझ आता है। हाथ काम न करे तो नित्य कर्म ही कठिन होता है। उस समय सामान्य होने का मूल्य समझ आता है। मानव जीवन में सामान्य समय चल रहा हो तो सवको उससे ऊव होने लगती है जो आंतरिक वेचैनी को बड़ा देता है। कुछ रोमांचक नहीं हो सब अपनी रफ्तार से चल रहा हो पर एक छोटी सी मुसीवत आ जाए तो वह सामान्य होना वरदान सा लगने लगता है। मानवीय प्रवृति तो इसी स्वरूप वाली ही है कि लगातार एक जैसा कुछ भी स्वीकार नहीं करती और परिवर्तन होते ही पुराने की चाहत करने लगती है। अर्थात् परिवर्तन चाहिए भी और उसे सहजता से स्वीकार भी नहीं कर पाती। हमेशा सर्वोच्च प्राप्त की इच्छा सामान्य से दूर करने को प्रेरित करती है। सामान्य सापेक्षिक शब्द एवं क्रिया है । प्रत्येक व्यक्ति का, स्थान का, परिस्थिति का सामान्य अलग-अलग होता है मेरे लिए सामान्य परिस्थिति

अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसकी हम कद्र नहीं करते।

जीवन के सामान्य चलने का अर्थ तो सम्पूर्ण विश्व को कोरोना महामारी ने बताया है जब जीवन की रफ्तार थम गयी। प्रत्येक परिवार को सहज रूप से उपलब्ध आवश्यकता की वस्तुओं की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य बन गया। घर की प्रत्येक अनुपयोगी वस्तु जैसे उपहार प्रतीत होने लगी। सुबह -सुबह सब्जी वाले की आवाज सुनने के अभ्यस्त कान उनकी अनुपस्थिति से उनके होने का और सामान्य जीवन कार्य चलने की गति के महत्व को समझे। परिवार के सामान्य प्रेम एवं व्यवहार को स्थापित कर दिया कोरोना ने। पड़ोसियों का साथ उनके होने का अहसास भी इस प्रतिकूल समय ने कराया। कहते है यदि संगठित होना है तो ''एक दुश्मन होने दीजिए'', प्रमाणित किया जब पूरा देश एक जुट हो नेतृत्व की एक आवाज पर सुरक्षा के उपाय करता अथवा संग्राम करता नजर आया। हमारे पारम्परिक जीवन जीने की उपयोगिता को इस कठिन समय ने प्रमाणित कर दिया। सम्पूर्ण विश्व हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की वैज्ञानिकता का लोहा मान गया। खान-पान, रहन-सहन, आदते सबके के लिए उदाहरण बन गई। कोरोना गाइड लाइन में कहा जाता है मुख, नाक, कान, आँख को न छुएं हमारे शास्त्रों में पूर्व से ही उल्लेख है कि,

अनातुरः स्वानि खानि न स्पृशेदनिमित्ततः।।[1]

अर्थात् अपने शरीर के अंगों जैसे आँख, नाक, कान, आदि बिना किसी कारण के छूना नहीं चाहिए। स्वच्छता बनाये रखने के लिए खाद्य सामग्री को भी हाथ से स्पर्श नहीं करना चाहिए। धर्म सिन्धु में उल्लेख है

लवणं व्यज्जनं चैव घृतं तैलं तथैव च।
लेह्यं पेयं च विविधं हस्तदत्तं न भक्षयेत्।।[2]

भारतीय परम्पराओं ने खाद्य पदार्थो का एवं मसालों का अपना वैज्ञानिक महत्व है। यह बात वर्तमान काल में प्रमाणित की है। भोजन कक्ष में नित्यप्रति उपयोग होने वालों मसालों ने अपने गुणों को सिद्ध किया है। हमारे घरों में प्रतिदिन प्रयोग होने वाली हल्दी ने विश्व में अपनी धूम मचा दी।

केवी एक्सपोर्ट के सी ई ओ 'कौशल खाखर ने बताया कच्ची हल्दी की मांग में 300 प्रतिशत वृद्धि हुई। ब्रिट्रेन और जर्मनी में मांग तेजी से बढ़ी। फरवरी के अंत में 300 किलो हल्दी निर्यात कर रहे थे, मार्च में मांग रोजना 3 टन हो गई।[3] योग के प्रयोग और प्राणायाम का औचित्य भी समझ आया, जब अस्पताल में भर्ती मरीजों को दवाई के डोज की तरह अनिवार्य रूप से योग्याभ्यास कराया गया। हमारा काढ़ा भी सामान्य से विशिष्ट वन गया। प्राचीन काल से ही घर की परिपक्व महिलाएँ सर्दी होने पर रसोई में प्रयुक्त मसालों का काढ़ा वना पिलाती थी। वह विश्व में ब्रांड वन कर उभर आया, यहाँ तक कि हमारे अभिवादन संस्कृति को भी (नमस्कार) विश्व ने सवश्रेष्ठ माना। वाहर से घर आने पर चप्पल जूता घर के बाहर रखना, हाथ पैर धोना भारतीय परम्परा जैसे सामान्य नियम भी विशिष्ट वन गए। हमारी परम्पराओं में शारीरिक स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाना हमारी नियमित दिनचर्या में शामिल रहा है ''यथा-

हस्तपादे मुखे चैव पञ्चार्द्रे भोजनं चरेत्।[4]

नाप्रक्षालितपाणिपादो भुञ्जीत।।[5]

अर्थात् भोजन पूर्व हाथ, मुंह, व पैर साफ करना चाहिए। यहां तक एक दूसरे के वस्त्र उपयोग न करने का उल्लेख भी शास्त्रों में मिलता है।

न धारयेत् परस्यैवं

रन्नानवस्त्रं कदाचन।।[6]

तथा न अन्यधृतं (वस्त्रं) धार्यम्।।[7]

न अप्रक्षालितं पूर्वधृतं वसनं बिभृयाद्।।[8]

अर्थात् दूसरे द्वारा पहने गए वस्त्रों को नहीं पहनना चाहिए तथा स्वयं के एक बार पहने हुए वस्त्रों को स्वच्छ करने के बाद दूसरी बार पहनना चाहिए।

हमारी भारतीय दिनचर्या में निर्देशित है, सामान्य भोजन पद्धति पर जो ताजा और सुपाच्य होती है पर जोर दिया गया है। कोरोना समय में जंक फूड की लोकप्रियता घटी और सामान्य खाना जो भारतीय परिवारों की नियमित थाली (दाल चावल सब्जी रोटी) ही सर्वमान्य हो अपनी उपयोगिता को प्रमाणित कर गई। हरी सब्जियों के औषधीय गुण उभर कर सामने आए। हमारी मुखवास लौंग इलायची ने भी अपनी प्रतिरोधक क्षमता का लोहा मनावाया। भारतीय हिन्दू परिवारों में सामान्य रूप से होने वाली पूजा पद्धति में प्रयुक्त होने वाले उपादानों का भी महत्व प्रतिपादित हुआ है। पूजा में प्रयुक्त हवन सामग्री एवं कपूर की उपयोगिता बढ़ गई। इन सभी वस्तुओं ने अपने कीटाणु नाशक स्वभाव का परिचय जन सामान्य को करवाया।

सामान्य रूप से सर्वत्र पाई जाने वाली प्राणवायु ने जैसे संपूर्ण व्यवस्था को डगमग कर दिया। ईश्वर अथवा प्रकृति द्वारा प्रदत्त ऑक्सीजन ने सत्ता धारियों की रातो की नींद गायब कर दी और यह प्राणवायु रातोरात सुर्खियों में स्थान प्राप्त कर गई।

मृत्यु जीवन की अनिवार्य शर्त भी सामान्य से विशिष्ट हो गई। जब कोई भी परिस्थिति सामान्य से अति की ओर जाती है तो वह जन विचार का और विरोध का कारण होती है। अत्यधिक मात्रा में मृत्यु होने से देश की तमाम व्यवस्थाएँ प्रश्न चिन्ह के दायरे में आ गई। भारतीय परम्परा में मृत्यु भी 16 संस्कारों में से एक संस्कार है उसमें प्रयुक्त होने वाले सामान्य क्रम का उपयोग नहीं हो पाना जन मानव में चिंता का और असंतुष्टि का तथा भय का वातावरण बना रही है। लोग अस्थियां संग्रह करने शमशान जाने से बचने का प्रयोग कर रहे है।[9] अंत्येष्ठि क्रिया में लगता है शमशान भी आंसू बहा रहे है। अंतिम क्रिया का पूर्णतः निर्वहन न होने से मृतात्माओं की मोक्ष यात्रा भी व्याधित हो रही है जिससे सुरक्षित भविष्य के प्रति एक वर्ग विशेष चिंतित है।

स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि इस विश्वव्यापी महामारी ने सामर्पण मानव समाज का सामान्य अवस्था, दशा एवं गति से विचलन कर दिया है। अब सकल विश्व का उद्देश्य सामान्य अवस्था को प्राप्त करना हो गया,

जिससे किसी भी क्रिया में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो एवं समाज अपनी सामान्य गति से निरंतर आगे, और आगे बढ़कर अपने लक्ष्य की पूर्ति में समर्पित रहे।

संदर्भ -

1. मनुस्मृति 4/144।
2. धर्मसिंधु 3 पू आह्निक।
3. YM.cdn-ampproject.org google से प्राप्त जानकारी दिनांक 21.3.2021।
4. पद्मा. सृष्टि 51/88।
5. सुश्रुतसांहिता चिकित्सा 24/18।
6. पद्मा. सृष्टि 51/83।
7. महाभारत अनु 104/83।
8. विष्णुस्मृति 64।
9. दैनिक भास्कर 30 अप्रैल 2021 मुद्रित एवं प्रकाशित 10 सिविल लाइन सागर पृ.1।